विषय : यात्रा ज़ारी ...

कौन करेगा इस यात्रा को अंत !

"बेटा तुम ~~क~~ अपनी यात्रा को जारी रखो। वो यात्रा जिसे मैं पूरी नहीं करपाई। वो यात्रा जिसके पूरा होने पर हमारी सवालों का जवाब मिल जाएगा। वो यात्रा जिसका प्रारंभ तुम्हारे जन्म होने की खबर मिलने के बाद शुरू हुआ था। वो यात्रा जिसको पूरी होना हमारा सपना था। अब मैं तो तुम्हारा हमसफर नहीं रही। पर चिंता मत करना, मैं हमेशा तुम्हारे साथ ही हूँ। माना कि जिस्म नहीं होगा पर तुम्हारी यादों में जिन्दा रहूँगी।"

"माँ...." रोहित अपने ~~सपने~~ नींद से चिल्लाते हुए जाग गया।

"क्या हुआ दोस्त... कोई बुरा सपना ~~कि~~ देखा है

क्या ?।" रोहित के पास बैठा एक हमउम्र वाला लड़के ने पूछा।

"नहीं सपना बुरा नहीं था। बल्कि ~~मैं~~ मेरी माँ मुझसे बात कर रही थी।" रोहित ने बोला।

"तुम्हारी माँ! वह सपने में तुमसे बात भी करती है। बहुत भाग्यशाली हो तुम। मेरी माँ ना मुझसे असली में बात करती है ना ही सपनों में। मैं तो अपने माँ को कभी देखा ही नहीं।"

उस लड़के के बात सुनकर रोहित को बहुत बुरा लगा। उसने उसकि हाथों में हाथ दबाकर ~~बोला~~ पूछा ~~तुम्हारी~~ "तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा .... ऐसा कोई नाम ही नहीं है। या फिर कह सकते है कि जो भी लोग मुझे बुलाते है वो सब मेरा नाम है। आपका नाम क्या है?"।

"रोहित"।

"बहुत सुंदर नाम है। ~~आपकि~~ आपकी माँ ने रखा हैना"

"हाँ...।" ~~माँ के~~ चेहरे में एक मुसकुराहट और आँखों में आँसू के साथ रोहीत ने बोला।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपने नींद में माँ को क्यों पुकारा था।" लड़के ने पूछा।

"मेरी माँ मुझे कुछ याद दिला रही थी। कह रही थी कि जो सफर उन्होंने शुरु किया था वो सफर को मैं जारी रखूँ।" और उनका शरीर मेरे पास हो ना हो उनकी साथ और यादें हमेशा मेरे पास है।" रोहित ने बोला।

"~~तुम्हें~~ क्या तुम मेरा हमसफर ~~बनना~~ बनना चाहते हो? मेरी यात्रा में साथी बनोगे?"

रोहित के सवाल सुनते ही उस लड़के ने हाँ बोला। और उसको ज़ोर से गले लगाकर बोलदिया कि 'अभ से तुम्हीं मैं मेरा सबकुछ हो। तुमको पता है पहली बार मुझसे किसीने अपना समझ कर बात किया है। दया और हमदर्दी हर लोग दिखाते हैं पर अपनापन किसीसे भी महसूस नहीं हुआ था। पता नहीं मैं आपसे कैसे शुक्रिया अदा करूँ।"

"इसकि कोई ज़रूरत नहीं है। माँ के बाद पहली बार मुझे भी किसी ~~अपनापन~~ ~~अपने~~ अपना होने को अहसास

हो रही है।" अब हिसाब बराबर हुआ ना। मैं तुम्हारा साथी और तुम मेरा।" "चलो मैं तुम्हें अपने घर लेचलता हूँ। और कल से हमारी यात्रा को फिरसे शुरु करना है। रोहित ने बोला।

"अरे ऐसा है तो घर जाना ज़रूरी है क्या? मैं कैसे रोहित को घर रहूँगा। उसके लिए मैं परेशानी तो नहीं बन जाऊँगा।" वह लड़का रोहित के पीछे पीछे चल तो रहा था लेकिन मन में ऐसे हज़ारों सवालों के साथ। उसकि हालत रोहित को समझ आरहा था फिर भी उसने कुछ नहीं बोला। बस अपनी लक्ष्य की ओर चलता रहा और दूसरा उसके पीछे।"

घर पहूंचने तक दोनों कुछ बात नहीं करी। बस अपने अपने ख़यालों में डूबे हुए थे। अचानक रोहित की आवाज़ बाहर आई। "राहुल, ... हाँ राहुल आज से तुम्हें मैं राहुल बुलाऊँगा। आज से तुम्हारा नाम है राहुल।"

"बहुत अच्छा नाम है। आज से मैं राहुल नाम से जानेंगे। अब से कोई भी मुझे कुछ भी नहीं बुलासकता

हैना।" अपनी नई नाम को बार-बार कहते हुए राहुल ~~स~~ चलते रहे।

अचानक एक सुंदर सी घर की आँगन में पहूंच कर रोहित अपना जेब में कुछ ढूंढने लगा।

"तुम क्या ढूंढ रहे हो? राहुल ने पूछा।

"घर की चाबी।" जवाब में रोहित ने बोला और चाबी से घर की दरवाज़ा खोला।

रोहित अंदर चला गया पर राहुल बाहर आशचर्य से खड़ा रह गया।

क्या हुआ? अंदर ~~आर~~ आओ। यही है मेरा घर। रोहित ने बोला।

"अगर आप के पास एक सुंदर सा घर था तो दो रात आप वहाँ क्यों सो रहे थे" राहुल ने पूछा।

"मैं तुम्हें ~~कु~~ सब बताऊँगा। ~~जो सब फि पहले~~ समय बाकी हैना और पूरी यात्रा सामने है। ~~क~~ धीरे-धीरे सब बताऊँगा। तुम अंदर आजाओ। मैं तुम्हारे लिये कपड़ा देता हूँ।" रोहित ने एक बेग में कुछ पैसा-दो तीन कपड़े, ~~क~~ एक बोतल पानी आदी सामान रखलिया और

एक बड़ा सा डब्बा खोल कर एक डायरी, दो ~~फ~~ फोटो और एक पेन ~~लेलिया~~ ले लिया। और वह डब्बे में अपनी माँ को कपड़ा, उनका चप्पल सब रखकर उसे ताला लगा दिया। और वह ~~डब~~ डब्बे को कुछ समय ~~अपना~~ ~~अपने~~ अपने आँसू भरी आंखों से ~~देख~~ निहारता रहा आखिर में एक चुंबन देकर वह कमरा भी ताला लगा कर बाहर आया।

राहुल ये सब देख रहा था। कुछ-कुछ बातें उसने ~~अच्छा~~ ~~क~~ खुद सोचकर समझ लिया। कुछ बातें उसको समझ में ~~आ~~ नहीं आरही थी। पर उसने अपनी मूह पर ताला लगा दिया। क्यों कि उसे लग रहा था कि सही समय पर रोहित उसको सबकुछ ~~बताऊँगा~~ बताएगा।

हफ्ते बीत गई। रोहित और राहुल अपनी यात्रा में एक दूसरे को अच्छे से समझने लगे। दोनों एक दूसरे के लिए सहारा बन गया था। कभी रोहित बीमार पड़ा तो कभी राहुल। पर दोनों ने एक दूसरे का इतना ख्याल रखा कि जो भी लोग उन दोनों से मिलते थे,

सब पूछने लगे थे कि, "क्या तुम दोनों ~~इक भाई हो~~ एक ही घर की बेटे हो ?"।

इत्ना पढ़ते ही वह अपना चश्मा उतारकर अपने आँसू को पोछने लगा। जो भी उन्हें देख रहे थे सब हैरान बैठा। यह आदमी जो इत्ना बड़ा साहित्यकार है, जो इत्ना ~~बड़े~~ सारा कहानीयाँ लिखता है वह अपना ही लिखा हुआ एक किताब पढ़कर क्यों रो रहे हैं। सबकी मन में यह सवाल उठा। पर किसीने पूछा नहीं। क्योंकि ~~वह~~ वह अपनी किताब को पूरी करने की जल्दी में था। और वहाँ मौजूद सब जानते थे कि कहीं भी लिखते समय उन्हें कोई परेशान किया तो उनको कितना ~~घुस्स~~ घुस्सा आता है। ~~सब~~ सब उनकी वो शब्द सुनने ~~के~~ का इंतज़ार करते रहे। वह ~~उ~~ अपना ~~कि~~ रचना को ~~पूरे~~ लिखते रहे। और ऐसा लिख रहा था कि जो कहानी लिख रहे थे। ना कुछ सोच रहा था ~~पर~~ ना ही कुछ बोल रहा था। पर बार-बार उनकी आँखें भरती ~~भर~~ रहीं।

शाम का सात बजने वाले थे। और वह ~~कहानी~~ कहानीकार अपनी रचना की आखिरी पड़ाव में था।

उस किताब को नाम देने वाला था। ~~न~~ यह समझते हुए किसी ने बोला कि "अरे यार आज तो इनको किताब पूरी नहीं होगा। क्योंकि मैं जानता हूँ कि एक किताब को नाम सोच समझकर रखी जाती है। इन्हें भी नाम सोचने के लिए वक्त ~~चा~~ लगेगा। लगता है हम कल ही इनसे बात कर पाएँगे"।

पर जो हुआ वो इसके पूरा उलटा था। उन्होंने नाम इतनी जलदी लिख लिया कि सब हैरान रह गये। अपने किताब को ~~पूरा~~ ~~ह~~ पूरतीकरण के बाद उन्होंने एक बार उसको अपने भरे हुए आखों से देखता रहा।

~~अपने चेहरा किताब से~~

"क्या आपलोग अभी तक यहाँ हो! मैंने ध्यान ही नहीं दिया। माँफ ~~कर~~ ~~कि~~ कीजिएगा।" उन्होंने बोला।

"कोई बात नहीं महान...। क्या हम पूछ सकते है कि आप क्या लिख रहा था जो आप इतना भावुक लग रहा था।" एक व्यक्ति ने बोला।

है कुछ अपनी जिन्दगी की कहानी। कल आप

लोगों को पता चलेगा। वह एक मुसकराहट से जवाब दिया।

"दोस्त जी.... आप का असली नाम क्या है। आप तो हर किताब में अपना ~~कहानिकार~~ नाम 'दोस्त' लिखते थे होगा...। एक ने पूछा।

"हाँ...। मैं अब इतना कहता हूँ कि कल मेरी किताब प्रकाशित किया जाएगा। और उसमें वो सारी बातें हैं जो आप को जानना है। इतना प्रतीक्षा किया है तो कुछ घंटे और सही...। दोस्त ने बोला।

एक नई सुबह का इंतज़ार सबको थी। ~~क्यों कि इस सुबह को सब पता~~ एक नई उम्मीद और खुशी का सबको तलाश थी। पर जो भी आज दोस्त के लिए इंतज़ार किया था सबके तलाश में एक खबर आई कि 'दोस्त' दुनिया छोड़कर चले गये। ~~सब ईश्वर स्तब्ध रहा~~ सब को शाक लगा। ~~पर~~ क्योंकि आज ही वो दिन था जिसमें वह अपना पूरी कहानी सबको बताने वाला था...।

दोस्त का मृतदेह को अंतीम संसकार के बाद सब एक जगह पर ~~इकट्ठे~~ जमा हो गये। ~~स~~ कोई एक उन्का ~~प~~ किताब पढ़ रहा था। सब की आँखें नम हो गयी थी। कहानी के आखिर में ~~इ~~ एसा लिखा था कि रोहित को हमसफर में राहुल ~~उसके~~ उसका माँ ~~के~~ द्वारा शुरू किया हुआ यात्रा जारी रखूँगा...। सब ~~को~~ रोने लगे थे। सब को मन में यही चल रहा था कि आखिर क्या लक्ष्य थी उन्को यात्रा ~~की~~ की। ना माँ पूरा नहीं करपाई। ना उन्को दोस्त रोहित पूरी करपाया ~~अब~~ दोस्त भी अपनी यात्रा को छोड़कर चले गये। पर ये यात्रा ज़ारी रहेगा। ~~और~~ हम में से कोई ना तो काई यात्रा को ~~पू~~ पूरा करेगा। एक बार फिर सब लोग वह किताब को नाम ज़ोर से पढ़ा। यात्रा ज़ारी....। ~~~~

लेखक : रोहित के दोस्त राहुल।